अध्याय 39

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**आराधना** (20मिनट) *[परमेश्वर की व्यक्त मनोवृति]* **परमेश्वर की सुनना।**

इस अध्याय में हम परमेश्वर की वाणी को सुनने के द्वारा अपनी आराधना को प्रगट करना सीखेगें।

1. परमेश्वर की वाणी को सुनने का प्रयास करें।

आराधना को अर्थ सिर्फ गीत गाना या प्रार्थना करना ही नहीं,वरन परमेश्वर की आवाज को सुनना भी है।

आराधना का मतलब योजनाबद्ध तरीके से इसलिए शान्त हो जाना है कि आप ध्यान से परमेश्वर की आवाज को सुन सकें।

-जब आप कुछ पढ़ते या उसकी आवाज़ को सुनते हैं तो अपना पूरा ध्यान उसकी बातों पर लगाएं।

-आपके विवेक,अन्त:करण, मन और हृदय में बोली जाने वाली पवित्र आत्मा पर ध्यान दें।

-अपने जीवन में परमेश्वर द्वारा किये जाने वाले कार्यों पर ध्यान दें।

अत: आराधना का अर्थ ध्यान देना और समझना है कि परमेश्वर आपसे क्या कहना चाहता है।

2. सच्चाई को खोजने का प्रयास करें।

सुनने का एक प्रमुख पहलू सत्य और झूठ के बीच में फरक को परखना है। बुरी आत्मा और बुरा व्यक्ति जलते हुए तीरों के समान आपके मन और आपकी आत्मा पर झूठ के द्वारा आक्रमण कर सकता है(इफिसियों 6:16),लेकिन परमेश्वर का आत्मा केवल आपके प्रति सच्चाई की उदघोषणा करता है और वह कभी ऐसी बात नहीं बोलता जो बाइबल के विरूद्ध हो(यूहन्ना 16:13)। इसलिए आपके लिए यह बहुत ज़रूरी है कि आप आत्मा में सुनी आवाज़(आत्मगत वाणी) को परमेश्वर के वचन (कर्मवाची वाणी)अर्थात बाइबल से मिला कर ज़रूर देख लें। केवल वे ही बातें जो बाइबल से मेल खाती हैं वे परमेश्वर के वचन हैं(1यूहन्ना 4:1-6)।

आराधना। आइये हम परमेश्वर का वचन पढ़ते हुए चुपचात परमेश्वर की आवाज़ सुनते हुए उसकी आराधना करें। उन बातों को सुनने की कोशिश करें जिन्हें परमेश्वर आपसे कहना चाहता है। (अगुवों गद्य खण्डों के बीच में विराम लेते हुए लूका 6:20-45 पढ़ें)।

3	**बाँटें** (20 मिनट) [शान्त समय] **रूत 1:4**

आपने जो कुछ दिये गये बाइबल अनुच्छेद (उत्पत्ति 12:1–15:21) से अपने शान्त समय में सीखा है उसे संक्षेप में **बाँटें या (अपनी कॉपी में से पढ़ें)।**

बताने वाले व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुने, उसे गम्भीरता से लें और स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70 मिनट) [मसीही चरित्र] **क्षमा करने वाली आत्मा**

यह मसीही चरित्र के बारे में एक अध्ययन है। आप कड़वाहट से किस प्रकार निपटते है?

इसके साथ साथ मैनुएल 4 के परिशिष्ट 17 को भी देखें। आप क्रोध से किस प्रकार निपटते हैं?

क. कड़वाहट और उसके कारण

1. कड़वाहट क्या है?

सिखाएं। कड़वाहट एक अक्षमा की आत्मा है। कड़वाहट उन चोटिल भावनाओं का नतीज़ा है जो ठीक नहीं हुई हैं। यह उस अन्याय व गलतफहमी के प्रति क्रोध का भाव है। कड़वाहट के कारण हमारा मन प्रभावित होता है और जिसके कारण चीज़ों के लिए हम सही परख नहीं कर पाते।

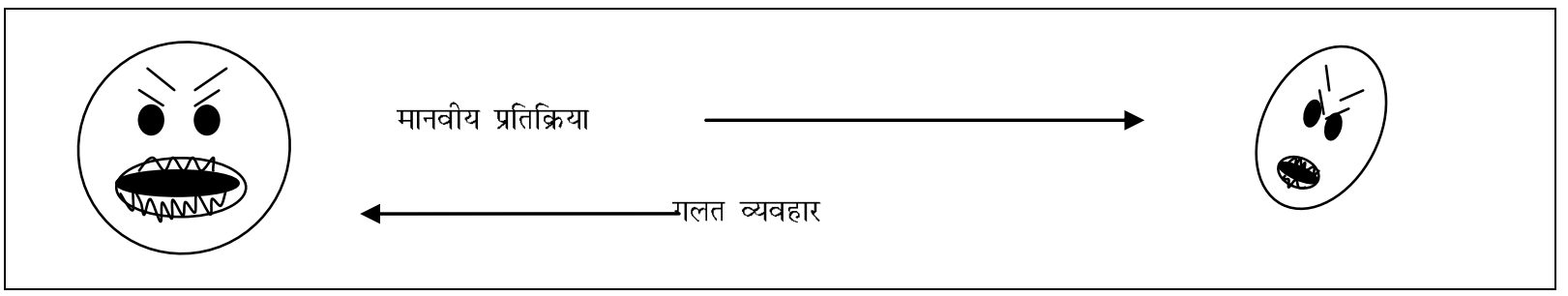
2. लोगों में कड़वाहट क्यों जन्म लेती है।

चर्चा। कौन से कारण हैं जिसके कारण आपका मन कड़वा हो जाता है?
ध्यान दें।

- **अन्याय.** हो सकता है कि आपके साथ सही व्यवहार न किया गया हो। हो सकता है कि किसी सरकारी अधिकारी ने सही कदम उठाने से इनकार कर दिया हो। किसी न्यायी ने गलत निर्णय सुना दिया हो। किसी डाक्टर न गलत दवाई लिख दी हो। आपके मालिक कभी आपकी पदोन्नति नहीं कर रहे हों। आपके अध्यापक आपके कार्यों के लिए आपको श्रेय नहीं दे रहे हों। आपका जीवन साथी आपको प्रेम नहीं कर रहा हो। आपका बच्चा आपको अस्वीकार कर रहा है।
- **फायदा उठाया जाना।** शायद किसी ने आपके अधिकारों की सीमा को लांघा हो। उसने आपकी भलाई का नाजायज़ फायदा उठाया हो। वह आपकी सेवा को हल्के में लेते हैं। या दूसरे लोग आपकी देह या चीज़ों का दुंउपयोग करते हैं।
- **भरोसे का टूटना।** आप भरोसा करके किसी घनिष्ठ मित्र को अपने मन के दु:खों व समस्याओं को बता देते हैं,और वह व्यक्ति किसी दूसरे के साथ वे बातें साझा करके आपके विश्वास को तोड़ देता है।
- **गलत अनुमान लगाना।** हो सकता है कि आपने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की हो लेकिन फिर भी आप दूसरों की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाए। आपको गलत समझा गया, आपकी बातों को गलत मलतब निकाला गया,मनोबल तोड़ा गया और आपको अस्वीकार कर दिया गया।
- **निराशा।** हो सकता है कि कोई व्यक्ति आपकी अपेक्षाओं पर खरा न उतरा हो। उसने अपना वायदा तोड़ दिया हो या उतना अच्छा काम नहीं कर पाया हो जिसकी आपने अपेक्षा की हो। आप अपने भीरत छला सा महसूस करते हैं।
- **विद्रोह।** कई बार परमेश्वर आपका चरित्र र्निमाण करने व उसके राज्य को आगे बढ़ाने के लिए आपके जीवन में कठिन परेशानियों को आने देते हैं। हो सकता है आपको परमेश्वर के इस व्यवहार से बुरा लगे और आपसे चरित्र व उसकी योजनाओं पर प्रश्न करने लगें।

ख.कड़वाहट की प्रतिक्रियाएं व उसके परिणाम

1.गलत व्यवहार के प्रति मानवीय प्रतिक्रियाओं के उदाहरण।



जब आप के साथ गलत व्यवहार किया जाता है तो आप उसे स्वाभाविक व मानवीय दृष्टिकोण से देखने लगत हैं। आपको केवल वह ठोकर खिलाने वाला ही व्यक्ति सामने नज़र आता है जिसने आपके साथ अन्याय किया हो। आपकी भावनाओं को ठेस पहुँची है;आपको गुस्सा आता है; आप उसके प्रति अपने मन में कड़वाहट महसूस करने लगते हैं। परिणाम स्वरूप आप इस ठाकर खिलाने वाले के प्रति प्रतिक्रिया जाहिर करने लगते हैं। आप उसकी बेइज्जती कर देते या उसे चोट पहुँचाते हैं। आप कैसे भी उससे बदला लेना चाहते हैं, आप उसके गलत काम करने के लिए उसे सबक सिखाना चाहते हैं। यह तरीका गलत व्यवहार को सबसे अहम मुद्दा मानता है और परमश्वर को इस सम्पूर्ण घटना से परमेश्वर को दूर रखा जाता है।

2. गलत व्यवहार के विरूद्ध कड़वाहट के परिणाम।

मत्ती 6:15; इब्रानियों 12:5-6, 10-11,14-16।

खोजें व चर्चा करें। परमेश्वर के साथ सम्बन्धों में, दूसरों के साथ सम्बन्धों में, और अपने आपको लेकर कड़वाहट के क्या परिणाम हैं?

ध्यान दें।

(1) कड़वाहट परमेश्वर के साथ आपके सम्बन्ध को प्रभावित करती है। परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते में दूरियां बढ़ती चली जाएंगी। जब आप परमेश्वर के अनुग्रह को क्षमा और प्रेम करने का अवसर प्रदान नहीं करते तो, आप पवित्रता और फलदायी होने के अवसर से वंचित हो जाते हैं।

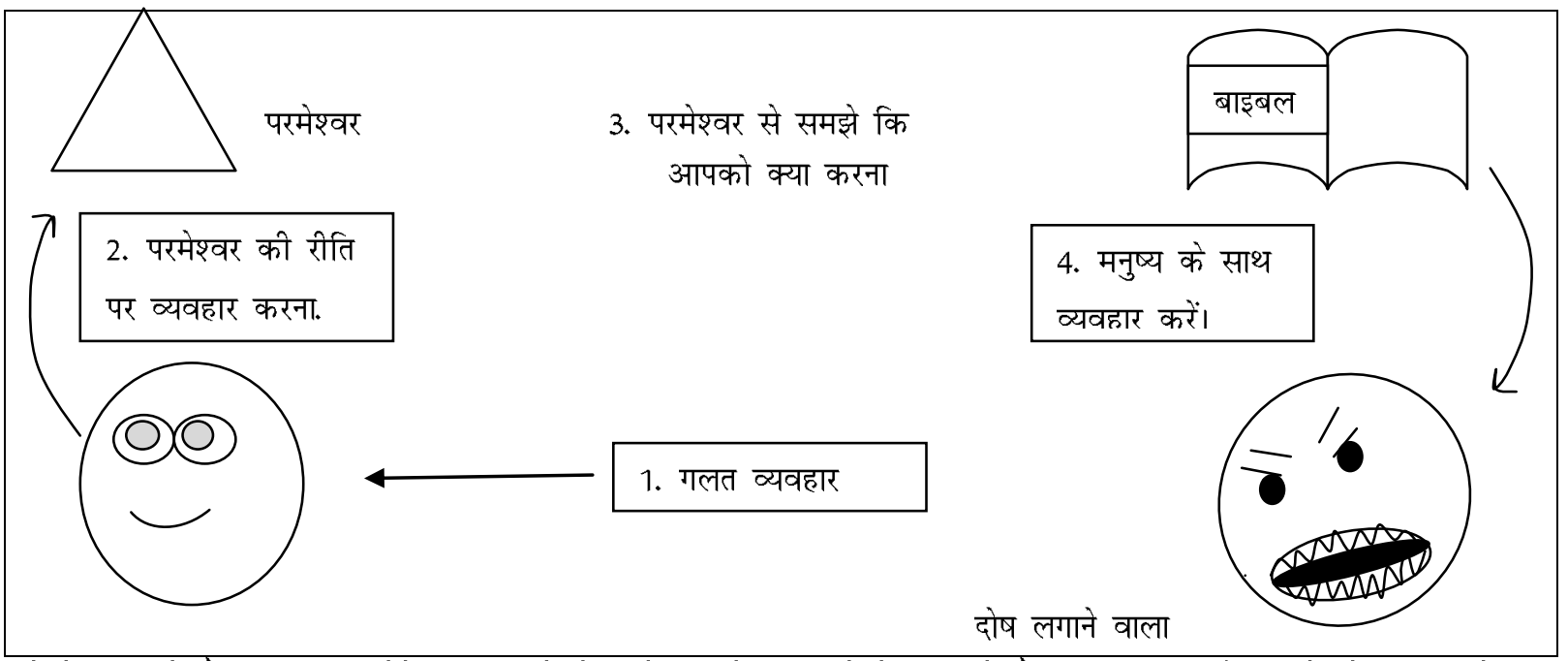
(2) कड़वाहट दूसरों के साथ आपके रिश्तों को प्रभावित करती है। या तो लोगों से दूर रहकर दोस्ती खो देते हैं या फिर अपना रिश्ता ही खत्म कर देते हैं। आपकी कड़वाहट की वजह से "काफी दिक्कतें होगीं व बहुत से लोग नाश हो जाएंगे"। आप एक परेशानी खड़ी करने वाले व्यक्ति बन जाएंगे। आप चोट पहुंचाने वाले व्यक्ति पर आरोप लगाते व उसे बदनाम करते हैं और चाहते हैं कि दूसरे भी आपके पक्ष में हां में हां भरें। जो लोग केवल आपकी बात व आपके ही पहलू को सुनते हैं वे आपकी तरफ लेकर दूसरे व्यक्ति के प्रति कड़वाहट व हर जगह झगड़ा उत्पन्न करेगा। कड़वाहट बहुत से टूटे रिश्तों व मण्डलियों की जड़ में छुपी है।

(3)कड़वाहट आपके अपने साथ ही रिश्ते को प्रभावित कर देती है। यह आपकी आत्मा,प्राण व देह के लिए एक जहर के समान है। वह आपके पूरे वजूद को दूषित कर देती है, आपकी परख की नज़र को व अनुमान को खराब कर देती है, आपका मिज़ाज बिगाड़ देती है, आपकी भावनाओं की धज्जियां उड़ा देती तथा आपके हृदय को कठोर बना देती है। आपका व्यवहार निष्ठुर, आलोचनात्मक, बैरी,आकर्षक हीन और निराशजनक हो जाता है। इसके कारण आपके सारे रिश्ते टूट जाते हैं और आप एक अकेले व्यक्ति रह जाते हैं।

ग. गलत व्यवहार से उत्पन्न कड़वाहट का उपचार।

1. गलत व्यवहार के प्रति ईश्वरीय प्रतिक्रिया का उदाहरण।

जब आपके साथ कोई गलत व्यवहार होता है तो आप उस परिस्थिति को एक मसीही जन के आलौकिक व स्वर्गीय दृष्टिकोण



से देख सकते हैं। आप सारी होने वाली बातों में परमेश्वर के हाथ को देख सकते हैं। आप सही बर्ताव करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह को मांगते है।

आप अपने दु:खदायी अनुभव से कुछ शिक्षा हासिल करना चाहते हैं। इसका परिणाम परमेश्वर से प्रार्थना करना, सही प्रतिक्रिया देने के लिए परमेश्वर के वचन का अध्ययन व चोट पहुंचाने वाले के साथ मेल मिलाप होता है।

2.यूसुफ के जीवन का उदाहरण

(1) यूसुफ के साथ गलत व्यवहार

खोजें व चर्चा करें। दूसरों ने यूसुफ के साथ कैसा व्यवहार किया?

ध्यान दें।

उसके अपने परिवार के लोगों ने यूसुफ के साथ बुरा व्यवहार किया(उत्पत्ति 37:1-36)। उसके भाई उससे जलते थे, उन्होंने उसके साथ बुरा व्यवहार किया और अन्त में उसे एक दास के रूप में बेच डाला। उन्होंने अपने पिता से झूठ बोला कि एक जंगली जानवर ने यूसुफ को खा लिया। यूसुफ ने ऐसा कोई काम नहीं किया था कि उसके साथ ऐसा बुरा बर्ताव किया जाए। वह अपने परिवार के अन्याय का निर्दोष शिकार बना।

उसके अधिकारियों ने यूसुफ के साथ बुरा बर्ताव किया (उत्पत्ति 39:1-20)। उसके मालिक की पत्नी ने उसे अनेकों बार भ्रष्ट करने का प्रयास किया। परन्तु उसने हमेशा इनकार किया और जिसके कारण उसकी मालकिन ने उस पर झूठा इल्ज़ाम लगाया व फलस्वरूप वह बिना किसी आरोप-प्रत्यारोप के जेल में डाल दिया गया। यूसुफ पूरी तरह से धार्मिक था। फिर भी वह अपने मालिक के अन्याय का शिकार बना।

यूसुफ के मित्रों ने उसके साथ बुरा व्यवहार किया(उत्पत्ति 40:1-23)। जब वे यूसुफ के साथ जेल में थे तब यूसुफ ने उनकी मदद की थी लेकिन वे पूरी तरह उसके बारे में भूल गये। वह काफी वर्षों तक जेल मं भूला-बिसरा अकेला रहा।

(2) यूसुफ का कष्ट।

उत्पत्ति 37:2 व 41:46।

खोजें व चर्चा करें। यूसुफ ने दूसरों के अत्याचारों को कितने वर्षों तक सहा?

ध्यान दें।

यूसुफ ने बहुत लम्बे समय तक कष्ट सहा। जब उसे गुलाम के रूप में बेचा गया तक उसकी उम्र महज 17 वर्ष की थी और जब वह वहां से आज़ाद हुआ तो उसकी आयु 30 वर्ष की थी। बड़ी रोचक घटनाओं से होते हुए, जब यूसुफ आज़ाद हुआ तो वह मिस्र का प्रधानमंत्री था। लेकिन उससे पूर्व उसने परदेश में 13 वर्ष एक गुलाम के समान व कैद में काटे, और यह सब लोगों द्वारा उसके साथ किये गये बुरे व्यवहार का नतीज़ा था।

(3) बुरे व्यवहार के प्रति यूसुफ की प्रतिक्रिया

उत्पत्ति 45:1-11पढ़ें।

खोजें व चर्चा करें। यूसुफ ने अपने साथ हुए गलत व्यवहार के प्रति कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उसने इन घटनाओं को किस नज़रिये से देखा।

ध्यान दें।

यूसुफ ने बुरे व्यवहार के प्रति आलौकिक प्रतिक्रिया दी। महाअकाल के दौरान,उसने मिस्र में बहुत से अनाज इकट्ठा कर रखा था(उत्पत्ति 41:47-49)। जबकि उसका स्वयं का परिवार कनान में भूखमरी का सामना कर रहा था। अत: उसके पिता ने उसके भाईयों को अनाज खरीदने के लिए मिस्र देश में भेजा। और अनजाने में उसके भाई भोजन की मांग करते हुए अपने भाई यूसुफ के सामने आ खड़े हुए। यूसुफ ने उन्हें पहिचान लिया लेकिन वे उन्हें नहीं पहिचान पाए(उत्पत्ति 42:1-8)। अन्त में यूसुफ ने अपने आप को अपने भाईयों पर प्रगट कर दिया और बिना किसी भय के उसके नज़दीक आने के लिए कहा।

उसने अपने साथ बुरा करने वालों के साथ मानवीय तरीके से गुस्से या धमकाके व्यवहार नहीं किया, लेकिन उसने ईश्वरीय स्वभाव के साथ व्यवहार किया। चार बार उसने अपने भाईयों से यह कहा कि वे डरें नहीं, क्योंकि परमेश्वर ने ही उन्हें बचाने के लिए उसे उनके आगे आगे यहां भेज दिया था। यूसुफ उसके साथ हुए बुरे व्यवहार के बीच में भी परमेश्वर की योजना को देश पा रहा था। इन कठिन व संघर्षपूर्ण वर्षों में भी यूसुफ की दृष्टि परमेश्वर पर लगी थी, अन्याय या कठिन परिस्थितियों

पर नहीं। परमेश्वर से उसने बिना गलती के शिकार होने वाली चोटिल भावनाओं में फँसे रहने की बजाय बुरे व्यवहार पर विजय प्राप्त करना सीख लिया था । उसकी तकलीफें परमेश्वर की सम्भावनाएं बन गयी थीं।

(4) दोषियों के प्रति यूसुफ की प्रतिक्रिया।

उत्पत्ति 45:13-15,21-24; उत्पत्ति 50:15-21 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। यूसुफ ने अपने उन भाईयों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया, जिन्होंने उसके साथ बुरा किया था?

ध्यान दें। यूसुफ ने अन्त में सही मानवीय प्रतिक्रिया की। उसन अपने भाईयों को क्षमा कर दिया। उसके भाईयों के साथ में उसका पुन: मिलन बड़ा हृदय विदारक दृश्य रहा होगा: वह उन्हें चिपटा, उन्हें चूमा, रोया और उनसे बातें की। सम्भवत: उनके आंसू पश्चाताप और आनन्द के आंसू थे। उसने अपने भाइयों की पुरानी गलतियों को अपने मन में नहीं रखा। उसने उनकी किसी गलती को नहीं दोहराया। जबकि उसके भाइयों की अनुपस्थिति में भी उसके लिए अपने भाइयों से मेल मिलाप करना मुश्किल था, उसने अपने भाईयों को क्षमा किया और परमेश्वर को अपने हृदय से कड़वाहट को दूरे करने के लिए अधिकार दिया। उनके पिता की मृत्यु के बाद उसके भाई फिर अपने लिए चिन्तित होने लगे। लेकिन,यूसुफ ने उन्हें स्वीकार किया और स्वीकार करने का एहसास भी दिलाया। यूसुफ ने बदला लेने की बजाय, उनकी भलाई और सहायता ही की। उसकी चोटिल भावनाएं बहुत वर्षों पहले ही चंगी हो चुकीं थीं।

(3) बुरे व्यवहार के सन्दर्भ में बाइबल की खिक्षाएं

(1) परीक्षाओं को किस प्रकार देखें।

रोमियों 8:28; फिलिप्पियों 1:12-24 **पढ़ें।**

खोजें और चर्चा करें। आप अपने प्रति हुए बुरे व्यवहार को किस प्रकार से देख सकते हैं।

ध्यान दें।

आप मान सकते हैं इस बुरे व्यवहार के द्वारा हम पर या दूसरों पर अपनी भलाई को प्रगट करना चाहता है।

(2) परीक्षा या कष्ट के समय में क्या करें।

लूका 17:3-4; 1पतरस 2:21-23;रोमियों 12:18

खोजें और चर्चा करें। बुरे व्यवहार के प्रति आपने कैसा व्यवहार करना चाहिए?

ध्यान दें। आपको कभी झुंझलाना या बदला नहीं लेना चाहिए, वरन अपने आपको पूरी तरह से परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर धर्म के साथ न्याय करता है। बुरा करने वाले व्यक्ति के बातों पर गौर न करके पहले परमेश्वर के सामने इस मसले को रखें। परमेश्वर से सकारात्मक तौर पर विचार करने व महसूस करने का अनुग्रह दे, परमेश्वर से इस कष्टकर घड़ी को सहने और अपने अपराधियों को क्षमा करने के लिए प्रेम की मांगे करें। परमेश्वर से मार्गदर्शन प्राप्त करने के बाद ही आप अपने अपराधी के साथ बर्ताव करें। परन्तु यदि अपराधी क्षमा करना या समझौता नहीं चाहता है तो उसके साथ शान्ति से रहने का प्रयास करें।

(3) चोटिल भावनाओं के साथ क्या करें।

भजन संहिता 38:1-22; भजन 62:8 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। हमारी भीतर बसी हुई चोटिल भावनाओं के साथ कैसे बर्ताव करें?

ध्यान दें।

अपनो भावनाओं और विचारों के प्रति परमेश्वर के सामने पूरी तरह ईमानदार रहें। खुले तौर पर अपने क्रोध, कड़वाहट, दर्द चोटिल भावनाओं को परमेश्वर के सामने व्यक्त करें। कई बार परमेश्वर आपके धावों को तुरन्त ठीक कर देंगे। लेकिन कई बार धावों को भरने में समय लगता है और आपको लगातार प्रार्थना करना और क्षमा करना पड़ता है। जब आपको क्षमा करना असम्भव लगे या आपके मन से चोटिल भावनाएं जाने का नाम ही न लें, तो अपने दो या तीन घनिष्ठ मित्रों से इस विषय पर तब तक प्रार्थना करने के लिए कहें जब तक कि वे भड़कीली भावनाएं आप में से दूर न हो जाएं(याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 5:16)।

(4) कष्टों के परिणामों को किस नज़रिये से देखें।

रोमियों 5:2-5;इब्रानियों 12:10-11; याकूब 1:2-4 **पढ़ें।**

खोजें और चर्चा करें। आपको कष्टों से क्या फायदा हो सकता है।

ध्यान दें।

कष्टों व परीक्षाओं से धीरज, चरित्र और पवित्रता का निर्माण होता है और जिससे आपका जीवन प्रभावशाली और फलदायी बनता है। परमेश्वर आपको परिवर्तित करने के लिए परिक्षाओं,कठिनाईयों और यहां तक कि सताव का इस्तेमाल करता है और फिर वह आपको दूसरों को परिवर्तित करनेवाला अर्थात शिष्य निर्माण करने वाला व्यक्ति बना देता है।

(5) व्यवहारिक अभ्यास

बीते समय में किसी प्रकार के हुए बुरे व्यवहार के बारे में विचार करें। यदि अभी भी जरूरी लगता है, तो मेल मिलाप करने की पहल करें। परमेश्वर को आज़ादी दें कि वह आपकी भावनात्मक चोटों और यादों को चंगा कर दे। अगली बार कभी कोई आपके साथ बुरा व्यवहार करे तो उस परिस्थिति में परमेश्वर को आपके चरित्र निर्माण करने का अवसर प्रदान करें।

(6) कड़वाहट रखने वाले दूसरे लोगों की किस प्रकार सहायता करें।

नीतिवचन 18:13 और 17 **पढ़ें।**

खोजे व चर्चा करें। किसी को सलाह देने से पहले आपको क्या करना चाहिए?

ध्यान दें।

सबसे पहले कड़वाहट से भरे व्यक्ति की बात ढंग से सुनने का प्रयास करें और उस पर हुए अन्याय व उसके पक्ष को समझने की कोशिश करें। फिर उस व्यक्ति की बात सुने जिसने उसे चोट पहुचाई है अर्थात विपरीत पक्ष की बात सुनें। इस परिस्थिति में उनकी सहायता करने के सबसे अच्छे मार्ग की तलाश करें। दोनों को एक साथ बुलाएं और दोनों पक्षों को एक दूसरे का पक्ष सुनने का मौका दें। अन्त में उन्हें एक दूसरे को क्षमा करने तथा एक दूसरे से मेल मिलाप करने का मौका प्रदान करें।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]***
		परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना

आज सीखी गयी शिक्षाओं की प्रतिक्रिया के रूप में अपने समूह में परमेश्वर से ***संक्षिप्त*** प्रार्थना करें।

या समूह को दो दो या तीन तीन में बाँट कर सीखी गयी बातों पर प्रतिक्रिया देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट)	**[निर्धारित कार्य]**
		अगले अध्याय के लिए

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ "क्षमा करने वाली आत्मा" की शिक्षा के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: 1शमूएल 9,10,12,14 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन । घर पर ही अगल बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। मत्ती4:1-11। विषय: संसार में परीक्षाएं। बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों वाले तरीके का इस्तेमाल करें। लेखा रखें ।

4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5- चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।